# मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

## संस्कृत विभाग

## स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम सेमेस्टर प्रणाली (CBCS)

## (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुसार)

## विषय - संस्कृत

## संकाय - मानविकी

## 2023-24 से प्रभावी

| Level | Sem | Course Type | Course Code | Course Title | Delivery Type | | | Total Hours | Credit | Internal Assessment | EoS Exam | M. M. | Remarks |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | Lecture | Tutorial | Practical | | | | | | |
| 8 | I | DCC | SAN8000T | वैदिक साहित्य | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN8001T | सांख्यदर्शन | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN8002T | व्याकरण एवं अनुवाद | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN8003T | काव्यशास्त्र एवं अलंकार | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN8004T | रूपक साहित्य | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN8005T | स्मृति साहित्य | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | | | | | | | | | | | |
| | II | DCC | SAN8006T | उपनिषद् साहित्य | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN8007T | वेदान्त दर्शन | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN8008T | व्याकरण एवं भाषाविज्ञान | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN8009T | व्याकरण दर्शन | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | SAN8010T | महाकाव्य एवं संस्कृत साहित्य का इतिहास | L | T | - | 60 | 2 | 20 | 80 | 100 | |
| | | GEC | SAN8100T | 0. प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं पुराणेतिहास | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN8101T | 1.श्रीमद्भगवद्गीता, नीतिकाव्य एवं अनुवाद | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | | | | | | | | | | | |
| 9 | III | DCC | SAN9011T | न्यायदर्शन | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN9012T | व्याकरण एवं व्याकरणशास्त्र का इतिहास | L | T | - | 60 | 2 | 20 | 80 | 100 | |
| | | DSE-I | SAN9102T | 2.काव्यशास्त्र | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN9103T | 3. योगदर्शन | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | DSE-II | SAN9104T | 4.चम्पूसाहित्य | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | SAN9105T | 5.वेदान्त दर्शन | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | DSE-III | SAN9106T | 6.नाट्यशास्त्र | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN9107T | 7.मीमांसादर्शन | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | GEC | SAN9108T | 8.प्राचीन भारत में राजधर्म | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN9109T | 9. नीति एवं सुभाषित पद्य | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | | | | | | | | | | | |
| | IV | DCC | SAN9013T | वैदिक व्याकरण एवं निरुक्त | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | DSE-IV | SAN9110T | 10.काव्यप्रकाश | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN9111T | 11.न्यायदर्शन | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | DSE-V | SAN9112T | 12. ध्वन्यालोक | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |

| | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | SAN9113T | 13.जैनदर्शन एवं बौद्धदर्शन | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | DSE-VI | SAN9114T | 14.दशरूपकम् | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN9115T | 15. सांख्यदर्शन | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | DSE-VII | SAN9116T | 16.उत्तररामचरितम् | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN9117T | 17.न्यायदर्शन | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | DSE-VIII | SAN9118T | 18.गद्यकाव्य | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |
| | | | SAN9119T | 19.वेदान्तदर्शन | L | T | - | 60 | 4 | 20 | 80 | 100 | |

| एम.ए.संस्कृत प्रथम सेमेस्टर | |
|---|---|
| **पाठ्यक्रम कूट संख्या** | SAN8000T |
| **पाठ्यक्रम क्रमांक** | I |
| **पाठ्यक्रम का नाम** | वैदिक साहित्य |
| **पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर** | एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0 |
| **पाठ्यक्रम की क्रेडिट** | 4 |
| **पाठ्यक्रम का प्रकार** | डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course) |
| **पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार** | 40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्यूटोरियल |
| **पाठ्यक्रम पठन की पूर्व-योग्यता** | स्तर 7 की उत्तीर्णता |
| **पाठ्यक्रम उद्देश्य** | वैदिक साहित्य के इतिहास ज्ञानसहित कतिपय संहिता सूक्तों के अध्ययन में निपुणता \| |
| **पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम** | 1. विद्यार्थी प्राचीन वैदिक संहिताओं के कतिपय सूक्तों एवं वैदिक साहित्य के इतिहास का अनुशीलन कर सकेंगे।<br>2. विद्यार्थियों में प्राचीन वैदिक संस्कृति एवं सदाचार की समझ विकसित होगी।<br>3. विद्यार्थी ज्ञान-विज्ञान के प्राचीन स्रोतों की तरफ उन्मुख हो सकेंगे।<br>4. विद्यार्थियों में वैदिक संस्कृत भाषा की समझ विकसित होगी। |
| **पाठ्यक्रम** | 1. ऋग्वेदीय, शुक्लयजुर्वेदीय एवं अथर्ववेदीय सूक्त (कुछ चुने हुए सूक्त मात्र)<br>2. वैदिक साहित्य का सामान्य इतिहास |

| पाठ्यक्रम की इकाइयाँ | |
|---|---|
| **प्रथम इकाई** | ऋग्वेद संहिता से निम्नलिखित संवाद सूक्त- पुरुरवा उर्वशी (10.95), सरमा-पणि (10.108), विश्वामित्र नदी (3.33) (12 घण्टे) |
| **द्वितीय इकाई** | ऋग्वेद संहिता के निम्नलिखित सूक्त- वरुण (1.25), सूर्य (1.115), उषस् (3.61), पर्जन्य (5.83) (12 घण्टे) |
| **तृतीय इकाई** | ऋग्वेद संहिता के निम्नलिखित सूक्त - अक्ष (10.34), ज्ञान (10.71), पुरुष (10.90), नासदीय (10.129) (12 घण्टे) |
| **चतुर्थ इकाई** | शुक्लयजुर्वेद संहिता के निम्नलिखित सूक्त - शिवसंकल्प, अध्याय-34 (1-6), प्रजापति, अध्याय 23 (1-5) तथा अथर्ववेद संहिता के निम्नलिखित सूक्त - राष्ट्राभिवर्धनम् (1.29), काल (19.53) (12 घण्टे) |
| **पंचम इकाई** | वैदिक साहित्य का सामान्य इतिहास के अन्तर्गत निम्नलिखित बिन्दु निर्धारित हैं-<br>वेदों का काल (मैक्समूलर, ए.वेबर, जैकोबी, बालगंगाधर तिलक, एम. विन्टरनिज तथा भारतीय परम्परागत विचार), संहिता साहित्य, ब्राह्मण साहित्य, आरण्यक साहित्य एवं वेदांग साहित्य (12 घण्टे) |
| **पाठ्यपुस्तकें** | 1. बृहद् ऋक्सूक्तसंग्रह, देवेन्द्रनाथ पाण्डेय, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर<br>2. वैदिक सूक्त संग्रह, गीताप्रेस, गोरखपुर<br>3. ऋग्वेद, संस्कृत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली<br>4. यजुर्वेद संहिता, श्रीराम शर्मा आचार्य, युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा<br>5. अथर्ववेद संहिता, श्रीराम शर्मा आचार्य, युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा<br>6. अथर्ववेद, संस्कृत साहित्य प्रकाशन, दिल्ली |
| **सन्दर्भपुस्तकें** | 1. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी |

| | |
|---|---|
| | 2. संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी<br>3. वैदिक साहित्य और संस्कृति, बलदेव उपाध्याय<br>4. वैदिक साहित्य का इतिहास, कुंवरलाल जैन, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली<br>5. पुरुषसूक्त : एक विवेचन, समी शर्मा, हंसा प्रकाशन, जयपुर |
| **ई संसाधन** | epustakalay.com |

| एम.ए. संस्कृत प्रथम सेमेस्टर | |
|---|---|
| **पाठ्यक्रम कूट संख्या** | SAN8001T |
| **पाठ्यक्रम क्रमांक** | II |
| **पाठ्यक्रम का नाम** | सांख्यदर्शन |
| **पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर** | एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0 |
| **पाठ्यक्रम की क्रेडिट** | 4 |
| **पाठ्यक्रम का प्रकार** | डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course) |
| **पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार** | 40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्यूटोरियल |
| **पाठ्यक्रम पठन की पूर्व-योग्यता** | स्तर 7 की उत्तीर्णता |
| **उद्देश्य** | भारतीय दर्शन शास्त्र की सांख्य दर्शन परंपरा का परिचय एवं प्रमुख ग्रन्थ सांख्यकारिका का अधिगम। |
| **पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम** | 1. विद्यार्थी सांख्य दर्शन के सार तत्त्व को समझ सकेंगे।<br>2. विद्यार्थियों की योगादि अन्य भारतीय दर्शनों की तरफ प्रवृत्ति हो सकेगी।<br>3. विद्यार्थियों में दर्शन विषय की ओर रुचि उत्पन्न होगी व जीवन में दार्शनिकता का प्रभाव हो सकेगा। |
| **पाठ्यक्रम** | ईश्वरकृष्णकृत सांख्यकारिका |
| **पाठ्यक्रम की इकाइयाँ** | |
| **प्रथम इकाई** | सांख्यकारिका की 1 से 16 कारिकाएँ (12 घण्टे) |

| | |
|---|---|
| **द्वितीय इकाई** | सांख्यकारिका की 17 से 35 कारिकाएँ (12 घण्टे) |
| **तृतीय इकाई** | सांख्यकारिका की 36 से 54 कारिकाएँ (12 घण्टे) |
| **चतुर्थ इकाई** | सांख्यकारिका की 55 से 72 कारिकाएँ (12 घण्टे) |
| **पंचम इकाई** | ईश्वरकृष्ण का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, सांख्यदर्शन के इतिहास का सामान्य परिचय, सांख्यदर्शन का प्रतिपाद्य एवं महत्त्व (12 घण्टे) |
| **पाठ्यपुस्तकें** | 1. सांख्यकारिका - व्या. विमला कर्णाटक, चौखंबा पब्लिशर्स, वाराणसी<br>2. सांख्यकारिका - व्या. देवेंद्र नाथ पांडेय, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर<br>3. सांख्यकारिका - व्या. ज्वाला प्रसाद गौड, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी |
| **सन्दर्भपुस्तकें** | 1. भारतीय दर्शन - जगदीश चंद्र मिश्र, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी<br>2. सांख्य दर्शन का इतिहास, उदयवीर शास्त्री<br>3. सांख्यदर्शनम्, गजानन शास्त्री मुसलगांवकर, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी |
| **ई संसाधन** | epustakalay.com |

| एम.ए. संस्कृत प्रथम सेमेस्टर | |
|---|---|
| **पाठ्यक्रम कूट संख्या** | SAN8002T |
| **पाठ्यक्रम क्रमांक** | III |
| **पाठ्यक्रम का नाम** | व्याकरण एवं अनुवाद |
| **पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर** | एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0 |
| **पाठ्यक्रम की क्रेडिट** | 4 |
| **पाठ्यक्रम का प्रकार** | डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course) |
| **पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार** | 40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्यूटोरियल |
| **पाठ्यक्रम पठन की पूर्व-योग्यता** | स्तर 7 की उत्तीर्णता |
| **पाठ्यक्रम उद्देश्य** | संस्कृत की व्याकरणशास्त्रपरंपरा में कारक प्रकरण के अधिगम के साथ संस्कृत अनुवाद में दक्षता प्राप्त करना। |
| **पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम** | 1. विद्यार्थी कारक प्रकरण के सूत्रों के ज्ञान के माध्यम से संस्कृत वाक्य निर्माण कर सकेंगे।<br>2. विद्यार्थी हिंदी से संस्कृत एवं संस्कृत से हिन्दी अनुवाद करने में समर्थ होंगे।<br>3. विद्यार्थियों की संस्कृत व्याकरण की ओर प्रवृत्ति एवं समझ विकसित हो सकेगी। |
| **पाठ्यक्रम** | 1. कारक प्रकरण (वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी का)<br>2. वाच्यपरिवर्तन (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य)<br>3. अनुवाद (हिन्दी से संस्कृत में) |
| **पाठ्यक्रम की इकाइयाँ** | |
| **प्रथम इकाई** | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी कारक प्रकरण - प्रथमा विभक्ति से द्वितीया विभक्ति पर्यन्त (12 घण्टे) |

| | |
|---|---|
| **द्वितीय इकाई** | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी कारक प्रकरण - तृतीया विभक्ति से चतुर्थी विभक्ति पर्यन्त (12 घण्टे) |
| **तृतीय इकाई** | वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी कारक प्रकरण - पंचमी विभक्ति से सप्तमी विभक्ति पर्यन्त (12 घण्टे) |
| **चतुर्थ इकाई** | सरल संस्कृत वाक्यों का वाच्यपरिवर्तन (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य) (12 घण्टे) |
| **पंचम इकाई** | हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद (12 घण्टे) |
| **पाठ्यपुस्तकें** | 1. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण), व्याख्याकार उमेशचन्द्र पाण्डेय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी<br>2. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण), व्याख्याकार अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर<br>3. वैयाकरणसिद्धान्तकौमुदी (कारक प्रकरण), व्याख्याकार - गोविंद प्रसाद शर्मा, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी |
| **सन्दर्भपुस्तकें** | 1. लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या - पंचम भाग), भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली<br>2. संस्कृत व्याकरण निकर, उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा क्लासिकल, वाराणसी<br>3. अनुवाद चंद्रिका - ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी<br>4. प्रौढ़ रचनानुवादकौमुदी, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी<br>5. रचनानुवादकौमुदी, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी<br>6. वृहदनुवाद चन्द्रिका - चक्रधर नौटियाल हंस |
| **ई संसाधन** | epustakalay.com |

| एम.ए. संस्कृत प्रथम सेमेस्टर | |
|---|---|
| **पाठ्यक्रम कूट संख्या** | SAN8003T |
| **पाठ्यक्रम क्रमांक** | IV |
| **पाठ्यक्रम का नाम** | काव्यशास्त्र एवं अलंकार |
| **पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर** | एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0 |
| **पाठ्यक्रम की क्रेडिट** | 4 |
| **पाठ्यक्रम का प्रकार** | डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course) |
| **पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार** | 40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्यूटोरियल |
| **पाठ्यक्रम पठन की पूर्व-योग्यता** | स्तर 7 की उत्तीर्णता |
| **पाठ्यक्रम उद्देश्य** | संस्कृत काव्यशास्त्र परंपरा के प्रमुख ग्रंथ साहित्यदर्पण एवं काव्यप्रकाश के कतिपय अंशों का अधिगम। |
| **पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम** | 1. विद्यार्थी काव्य की परिभाषा, प्रयोजन, शब्दशक्तियों एवं अलंकारों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।<br>2. विद्यार्थियों में काव्यशास्त्र की उपयोगिता की समझ विकसित होगी।<br>3. कवित्व प्रतिभा वाले विद्यार्थियों के काव्यकौशल में वृद्धि होगी।<br>4. विद्यार्थियों की अन्य काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों की ओर प्रवृत्ति हो सकेगी। |
| **पाठ्यक्रम** | 1. आचार्य विश्वनाथ विरचित साहित्यदर्पण - प्रथम एवं द्वितीय परिच्छेद |

| | |
|---|---|
| | 2. आचार्य मम्मट विरचित काव्यप्रकाश - नवम एवं दशम उल्लास के कतिपय प्रमुख अलंकार |
| **पाठ्यक्रम की इकाइयाँ** | |
| **प्रथम इकाई** | साहित्यदर्पण - प्रथम परिच्छेद (12 घण्टे) |
| **द्वितीय इकाई** | साहित्यदर्पण - द्वितीय परिच्छेद के प्रारम्भ से लक्षणा शब्दशक्ति तक (12 घण्टे) |
| **तृतीय इकाई** | साहित्यदर्पण - द्वितीय परिच्छेद में व्यञ्जना शब्दशक्ति से द्वितीय परिच्छेद की समाप्ति तक (12 घण्टे) |
| **चतुर्थ इकाई** | काव्यप्रकाश के निम्नलिखित अलङ्कारों का लक्षण एवं उदाहरण सहित अध्ययन - वक्रोक्ति, अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, समासोक्ति एवं अपह्नुति (12 घण्टे) |
| **पंचम इकाई** | काव्यप्रकाश के निम्नलिखित अलङ्कारों का लक्षण एवं उदाहरण सहित अध्ययन - निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, दृष्टान्त, विभावना, विशेषोक्ति, स्वभावोक्ति, विरोधाभास, संकर एवं संसृष्टि (12 घण्टे) |
| **पाठ्यपुस्तकें** | 1. साहित्यदर्पण, व्याख्याकार शेषराजशर्मा रेग्मी, चौखम्बा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी<br>2. साहित्यदर्पण (1,2,3,6 परिच्छेद), व्याख्याकार भवानीशंकर शर्मा, हंसा प्रकाशन, जयपुर<br>3. साहित्यदर्पण, व्याख्याकार सत्यव्रत सिंह, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी<br>4. काव्यप्रकाश, व्याख्याकार विश्वेश्वर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी<br>5. काव्यप्रकाश, व्याख्याकार श्रीनिवास शास्त्री, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी |
| **सन्दर्भपुस्तकें** | 1. संस्कृत काव्यशास्त्र एव काव्यांग, प्रीतिप्रभा गोयल, अरिहन्त प्रकाशन, जोधपुर |

| | |
|---|---|
| | 2. साहित्यदर्पण परिशीलन, त्रिभुवन मिश्र, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी<br>3. संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, सुशील कुमार डे, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना |
| **ई संसाधन** | epustakalay.com |

| एम.ए. संस्कृत प्रथम सेमेस्टर | |
|---|---|
| **पाठ्यक्रम कूट संख्या** | SAN8004T |
| **पाठ्यक्रम क्रमांक** | V |
| **पाठ्यक्रम का नाम** | रूपक साहित्य |
| **पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर** | एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0 |
| **पाठ्यक्रम की क्रेडिट** | 4 |
| **पाठ्यक्रम का प्रकार** | डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course) |
| **पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार** | 40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्यूटोरियल |
| **पाठ्यक्रम पठन की पूर्व-योग्यता** | स्तर 7 की उत्तीर्णता |
| **पाठ्यक्रम उद्देश्य** | संस्कृत रूपक साहित्य के प्रसिद्ध ग्रन्थ मृच्छकटिकम् का अधिगम। |
| **पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम** | 1. विद्यार्थी महाकवि शूद्रक की नाट्यकला से परिचित हो सकेंगे।<br>2. विद्यार्थी मृच्छकटिककालीन समाज और संस्कृति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।<br>3. विद्यार्थियों की अन्य संस्कृत रूपक साहित्य की ओर प्रवृत्ति हो सकेगी।<br>4. विद्यार्थियों का संस्कृत भाषा का प्रायोगिक एवं व्यावहारिक पक्ष मजबूत हो सकेगा। |
| **पाठ्यक्रम** | 1. महाकवि शूद्रक विरचित मृच्छकटिकम् |
| **पाठ्यक्रम की इकाइयाँ** | |
| **प्रथम इकाई** | मृच्छकटिकम् - प्रथम एवं द्वितीय अंक (12 घण्टे) |

| | |
|---|---|
| **द्वितीय इकाई** | मृच्छकटिकम् - तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम अंक (12 घण्टे) |
| **तृतीय इकाई** | मृच्छकटिकम् - षष्ठ, सप्तम एवं अष्टम अंक (12 घण्टे) |
| **चतुर्थ इकाई** | मृच्छकटिकम् - नवम एवं दशम अंक (12 घण्टे) |
| **पंचम इकाई** | महाकवि शूद्रक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, महाकवि शूद्रक की नाट्यकला, मृच्छकटिकम् के पात्रों का परिचय एवं चरित्रचित्रण, मृच्छकटिकम् में प्रतिबिम्बित समाज तथा संस्कृति (12 घण्टे) |
| **पाठ्यपुस्तकें** | 1. मृच्छकटिकम्, व्याख्याकार जयशंकर लाल त्रिपाठी, चौखंबा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी<br>2. मृच्छकटिकम्, व्याख्याकार जगदीश चन्द्र मिश्र, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी<br>3. मृच्छकटिकम्, व्याख्याकार शिवबालक द्विवेदी, हंसा प्रकाशन, जयपुर<br>4. संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी |
| **सन्दर्भपुस्तकें** | 1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी<br>2. मृच्छकटिकम् के शास्त्रीय सन्दर्भ, आरुणेय मिश्र, अक्षय वट प्रकाशन, इलाहाबाद<br>3. मृच्छकटिकम् का भाव सौन्दर्य, वेदप्रकाश उपाध्याय, अनुराग प्रकाशन, वाराणसी |
| **ई संसाधन** | epustakalay.com |

| एम.ए. संस्कृत प्रथम सेमेस्टर | |
|---|---|
| **पाठ्यक्रम कूट संख्या** | SAN8005T |
| **पाठ्यक्रम क्रमांक** | VI |
| **पाठ्यक्रम का नाम** | स्मृति साहित्य |
| **पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर** | एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0 |
| **पाठ्यक्रम की क्रेडिट** | 4 |
| **पाठ्यक्रम का प्रकार** | डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course) |
| **पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार** | 40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्यूटोरियल |
| **पाठ्यक्रम पठन की पूर्व-योग्यता** | स्तर 7 की उत्तीर्णता |
| **पाठ्यक्रम उद्देश्य** | संस्कृत स्मृति साहित्य की प्रमुख स्मृतियों के अन्तर्गत मनुस्मृति एवं याज्ञवल्क्य स्मृति के कतिपय अध्यायों का अधिगम। |
| **पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम** | 1. विद्यार्थी धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।<br>2. विद्यार्थियों को प्राचीन न्याय व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।<br>3. विद्यार्थी प्राचीन भारतीय संस्कृति को समझने में समर्थ हो सकेंगे। |
| **पाठ्यक्रम** | 1. मनुस्मृति - प्रथम एवं द्वितीय अध्याय<br>2. याज्ञवल्क्यस्मृति - व्यवहाराध्याय का साधारणव्यवहारमातृका प्रकरण, असाधारणव्यवहारमातृका प्रकरण, ऋणादानप्रकरण, उपनिधिप्रकरण एवं साक्षिप्रकरण |

| पाठ्यक्रम की इकाइयाँ | |
|---|---|
| **प्रथम इकाई** | मनुस्मृति - प्रथम अध्याय (12 घण्टे) |
| **द्वितीय इकाई** | मनुस्मृति - द्वितीय अध्याय (1 से 119 श्लोक तक) (12 घण्टे) |
| **तृतीय इकाई** | मनुस्मृति - द्वितीय अध्याय (120 से अध्याय समाप्ति तक) (12 घण्टे) |
| **चतुर्थ इकाई** | याज्ञवल्क्यस्मृति - व्यवहाराध्याय का साधारणव्यवहारमातृका प्रकरण एवं असाधारणव्यवहारमातृका प्रकरण (12 घण्टे) |
| **पंचम इकाई** | याज्ञवल्क्यस्मृति - व्यवहाराध्याय का ऋणादानप्रकरण, उपनिधिप्रकरण एवं साक्षिप्रकरण (12 घण्टे) |
| **पाठ्यपुस्तकें** | 1. मनुस्मृति, टीकाकार हरगोविन्द शास्त्री, चौखंबा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी<br>2. मनुस्मृति (प्रथम एवं द्वितीय अध्याय), व्याख्याकार कमलनयन शर्मा, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर<br>3. मनुस्मृति, जनार्दन शास्त्री पाण्डेय, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, वाराणसी<br>4. याज्ञवल्क्यस्मृति (व्यवहाराध्याय), व्याख्याकार कमलनयन शर्मा, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर<br>5. याज्ञवल्क्यस्मृति, व्याख्याकार उमेश चंद्र पांडेय, चौखंबा संस्कृत संस्थान, वाराणसी |
| **ई संसाधन** | epustakalay.com |

| एम.ए. संस्कृत द्वितीय सेमेस्टर | |
|---|---|
| **पाठ्यक्रम कूट संख्या** | SAN8006T |
| **पाठ्यक्रम क्रमांक** | I |
| **पाठ्यक्रम का नाम** | उपनिषद् साहित्य |
| **पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर** | एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0 |
| **पाठ्यक्रम की क्रेडिट** | 4 |
| **पाठ्यक्रम का प्रकार** | डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course) |
| **पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार** | 40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्यूटोरियल |
| **पाठ्यक्रम पठन की पूर्व-योग्यता** | स्तर 7 की उत्तीर्णता |
| **पाठ्यक्रम उद्देश्य** | वैदिक उपनिषद् साहित्य की प्रमुख उपनिषदों के अन्तर्गत ईश, केन एवं तैत्तिरीय उपनिषद् का अधिगम। |
| **पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम** | 1. विद्यार्थी वैदिक उपनिषद् साहित्य की प्रमुख उपनिषदों के अन्तर्गत ईश, केन एवं तैत्तिरीय उपनिषद् का अधिगम कर सकेंगे।<br>2. विद्यार्थी वैदिक साहित्य के मर्म विषय उपनिषदों को समझ सकेंगे।<br>3. विद्यार्थियों की पाठ्यक्रमेतर उपनिषदों के अध्ययन की ओर प्रवृत्ति हो सकेगी।<br>4. विद्यार्थियों में नैतिक गुणों का विकास होगा। |
| **पाठ्यक्रम** | 1. ईशावास्योपनिषद् (शुक्लयजुर्वेदीय काण्वशाखीय)<br>2. केनोपनिषद्<br>3. तैत्तिरीयोपनिषद् - शीक्षावल्ली |

| पाठ्यक्रम की इकाइयाँ | |
|---|---|
| **प्रथम इकाई** | ईशावास्योपनिषद् (सम्पूर्ण) (12 घण्टे) |
| **द्वितीय इकाई** | केनोपनिषद् - प्रथम एवं द्वितीय खण्ड (12 घण्टे) |
| **तृतीय इकाई** | केनोपनिषद् - तृतीय एवं चतुर्थ खण्ड (12 घण्टे) |
| **चतुर्थ इकाई** | तैत्तिरीयोपनिषद् - शीक्षावल्ली - प्रथम अनुवाक से षष्ठ अनुवाक तक (12 घण्टे) |
| **पंचम इकाई** | तैत्तिरीयोपनिषद् - शीक्षावल्ली - सप्तम अनुवाक से द्वादश अनुवाक तक (12 घण्टे) |
| **पाठ्यपुस्तकें** | 1. ईशादि नौ उपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर<br>2. तैत्तिरीयोपनिषद्, गीताप्रेस, गोरखपुर<br>3. केनोपनिषद्, जगन्नाथ शास्त्री तैलंग, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली<br>4. ईशोपनिषद्, परमहंस हरिहरानंद, प्राज्ञ पब्लिकेशन, कोलकाता<br>5. ईशावास्योपनिषद्, हरस्वरूप वशिष्ठ, हंसा प्रकाशन, जयपुर |
| **सन्दर्भ पुस्तकें** | 1. उपनिषदों के निर्वचन, वेदवती वैदिक, नाग पब्लिशर्स<br>2. उपनिषद् योग तत्त्व दर्शन, विनय कुमार शर्मा, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी |
| **ई संसाधन** | epustakalay.com |

| एम.ए. संस्कृत द्वितीय सेमेस्टर | |
|---|---|
| **पाठ्यक्रम कूट संख्या** | SAN8007T |
| **पाठ्यक्रम क्रमांक** | II |
| **पाठ्यक्रम का नाम** | वेदान्त दर्शन |
| **पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर** | एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0 |
| **पाठ्यक्रम की क्रेडिट** | 4 |
| **पाठ्यक्रम का प्रकार** | डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course) |
| **पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार** | 40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्यूटोरियल |
| **पाठ्यक्रम पठन की पूर्व-योग्यता** | स्तर 7 की उत्तीर्णता |
| **पाठ्यक्रम उद्देश्य** | भारतीय दर्शनशास्त्र की वेदान्त दर्शन परंपरा का परिचय एवं प्रमुख ग्रन्थ वेदान्तसार का अधिगम \| |
| **पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम** | 1. विद्यार्थी भारतीय दर्शन शास्त्र की वेदान्त दर्शन परंपरा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।<br>2. विद्यार्थी वेदान्त दर्शन के सारभूत ग्रन्थ वेदान्तसार का अधिगम कर सकेंगे।<br>3. विद्यार्थियों के जीवन में वेदांत दर्शन का प्रभाव हो सकेगा।<br>4. विद्यार्थियों की अन्य वेदांत ग्रन्थों को पढ़ने की ओर प्रवृत्ति हो सकेगी। |
| **पाठ्यक्रम** | सदानन्द कृत वेदान्तसार |
| **पाठ्यक्रम की इकाइयाँ** | |

| | |
|---|---|
| **प्रथम इकाई** | "अखण्डं सच्चिदानन्दं" से "विविक्तं सल्लक्ष्यमितिचोच्यते" तक। (12 घण्टे) |
| **द्वितीय इकाई** | "अस्याज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकं शक्तिद्वयम्" से लेकर "एवमध्यारोपः" तक। (12 घण्टे) |
| **तृतीय इकाई** | "अपवादो नाम रज्जुविवर्तस्य" से "स्वप्रभया तदपि भासयतीति" तक। (12 घण्टे) |
| **चतुर्थ इकाई** | "एवंभूतस्वरूपचैतन्यसाक्षात्कारपर्यन्तं" से अन्त तक। (12 घण्टे) |
| **पंचम इकाई** | सदानन्द का व्यक्तित्व एवं कृतित्व, वेदान्त दर्शन का इतिहास तथा सामान्य परिचय एवं महत्त्व। (12 घण्टे) |
| **पाठ्यपुस्तकें** | 1. वेदान्तसार, व्याख्याकार बद्रीनाथ शुक्ल, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, वाराणसी<br>2. वेदान्तसार, व्याख्याकार लम्बोदर मिश्र, हंसा प्रकाशन, जयपुर<br>3. वेदान्तसार, व्याख्याकार रमाशंकर त्रिपाठी, चौखंभा ओरियंटालिया, दिल्ली<br>4. वेदान्तसार, व्याख्याकार रामशरण त्रिपाठी, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी<br>5. वेदान्तसार, व्याख्याकार गजानन शास्त्री मुसलगांवकर, चौखंबा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी |
| **सन्दर्भ पुस्तकें** | 1. भारतीय दर्शन, जगदीश चंद्र मिश्र, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी<br>2. भारतीय दर्शन का इतिहास, एस.एन. गुप्त, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी |
| **ई संसाधन** | epustakalay.com |

| एम.ए. संस्कृत द्वितीय सेमेस्टर | |
|---|---|
| **पाठ्यक्रम कूट संख्या** | SAN8008T |
| **पाठ्यक्रम क्रमांक** | III |
| **पाठ्यक्रम का नाम** | व्याकरण एवं भाषाविज्ञान |
| **पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर** | एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0 |
| **पाठ्यक्रम की क्रेडिट** | 4 |
| **पाठ्यक्रम का प्रकार** | डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course) |
| **पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार** | 40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्यूटोरियल |
| **पाठ्यक्रम पठन की पूर्व-योग्यता** | स्तर 7 की उत्तीर्णता |
| **उद्देश्य** | व्याकरणशास्त्र के समास प्रकरण एवं भाषाविज्ञान का अधिगम। |
| **पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम** | 1. विद्यार्थी व्याकरणशास्त्र के प्रमुख विषय समास का अधिगम कर सकेंगे।<br>2. विद्यार्थियों की संस्कृत भाषा दक्षता में वृद्धि होगी।<br>3. विद्यार्थी भाषाविज्ञान के अधिगम से भाषाओं की जननी कही जाने वाली संस्कृत की विशेषताओं को समझ सकेंगे।<br>4. विद्यार्थी भाषाविज्ञान के अधिगम से विश्वभाषाओं का तुलनात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। |
| **पाठ्यक्रम** | 1. लघुसिद्धान्तकौमुदी का समास प्रकरण<br>2. भाषाविज्ञान |

| पाठ्यक्रम की इकाइयाँ | |
|---|---|
| **प्रथम इकाई** | लघुसिद्धान्तकौमुदी के समास प्रकरण में केवलसमास प्रकरण एवं अव्ययीभावसमास प्रकरण (12 घण्टे) |
| **द्वितीय इकाई** | लघुसिद्धान्तकौमुदी के समास प्रकरण में तत्पुरुषसमास प्रकरण (कर्मधारय एवं द्विगु समास सहित) (12 घण्टे) |
| **तृतीय इकाई** | लघुसिद्धान्तकौमुदी के समास प्रकरण में बहुव्रीहिसमास प्रकरण, द्वन्द्वसमास प्रकरण एवं समासान्तप्रकरण (12 घण्टे) |
| **चतुर्थ इकाई** | भाषाविज्ञान के अन्तर्गत निम्नलिखित विषयों का अध्ययन अपेक्षित है - भाषा की परिभाषा, भाषा का वर्गीकरण (आकृतिमूलक एवं पारिवारिक), ध्वनियों का वर्गीकरण: स्पर्श, संघर्षी, अर्धस्वर, स्वर (संस्कृत ध्वनियों के विशेष संदर्भ में), मानवीय ध्वनियंत्र, ध्वनि परिवर्तन के कारण, ध्वनि नियम (ग्रिम, ग्रासमान वर्नर) (12 घण्टे) |
| **पंचम इकाई** | भाषाविज्ञान के अन्तर्गत निम्नलिखित विषयों का अध्ययन अपेक्षित है - अर्थ परिवर्तन की दिशाएँ एवं कारण, वाक्य का लक्षण व भेद, भारोपीय परिवार का सामान्य परिचय, वैदिक संस्कृत एवं लौकिक संस्कृत में अन्तर, भाषा तथा वाक् में अन्तर, भाषा तथा बोली में अन्तर। (12 घण्टे) |
| **पाठ्यपुस्तकें** | 1. लघुसिद्धान्तकौमुदी, व्याख्याकार - गोविंद प्रसाद शर्मा, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी<br>2. लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या- चतुर्थ भाग), भीमसेन शास्त्री, भैमी प्रकाशन, दिल्ली |
| **सन्दर्भ पुस्तकें** | 1. भाषाविज्ञान, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी<br>2. भाषाविज्ञान की रूपरेखा, उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखंबा क्लासिकल, वाराणसी<br>3. भाषाविज्ञान, भोलानाथ तिवारी, किताब महल प्रकाशन |

| | |
|---|---|
| | 4. संस्कृत व्याकरण, प्रीतिप्रभा गोयल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर<br>5. प्रौढ रचनानुवादकौमुदी, कपिल देव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी<br>6. संस्कृत व्याकरण निकर, उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखम्बा क्लासिकल, वाराणसी |
| **ई संसाधन** | epustakalay.com |

| एम.ए. संस्कृत द्वितीय सेमेस्टर | |
|---|---|
| **पाठ्यक्रम कूट संख्या** | SAN8009T |
| **पाठ्यक्रम क्रमांक** | IV |
| **पाठ्यक्रम का नाम** | व्याकरण दर्शन |
| **पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर** | एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0 |
| **पाठ्यक्रम की क्रेडिट** | 4 |
| **पाठ्यक्रम का प्रकार** | डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course) |
| **पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार** | 40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्यूटोरियल |
| **पाठ्यक्रम पठन की पूर्व-योग्यता** | स्तर 7 की उत्तीर्णता |
| **उद्देश्य** | व्याकरणशास्त्र के दार्शनिक ग्रन्थ महाभाष्य (पश्पशाह्निक) एवं पाणिनीयशिक्षा का अधिगम। |
| **पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम** | 1. विद्यार्थी व्याकरणशास्त्र के दार्शनिक ग्रन्थ महाभाष्य (पश्पशाह्निक) एवं पाणिनीयशिक्षा का अधिगम कर सकेंगे।<br>2. विद्यार्थी व्याकरणशास्त्र के प्रयोजनों एवं आधारभूत सिद्धांतों से परिचित हो सकेंगे।<br>3. विद्यार्थियों में संस्कृत भाषा का वर्ण-विवेक-ज्ञान उत्पन्न हो सकेगा। |
| **पाठ्यक्रम** | 1. महाभाष्य पश्पशाह्निक<br>2. पाणिनीयशिक्षा |
| **पाठ्यक्रम की इकाइयाँ** | |

| | |
|---|---|
| **प्रथम इकाई** | महाभाष्य पश्पशाह्निक - प्रारम्भ से 'उक्तः शब्दः। स्वरूपमप्युक्तम्। प्रयोजनान्यप्युक्तानि।' तक (12 घण्टे) |
| **द्वितीय इकाई** | महाभाष्य पश्पशाह्निक - 'शब्दानुशासनमिदानीं कर्त्तव्यम्। तत्कथं कर्त्तव्यम्?' से 'तैः पुनरसुरैर्याज्ञे कर्मण्यपभाषितम्, ततस्ते पराभूताः।' तक (12 घण्टे) |
| **तृतीय इकाई** | महाभाष्य पश्पशाह्निक - 'अथ व्याकरणम् इत्यस्य शब्दस्य कः पदार्थ:?' से समाप्ति तक (12 घण्टे) |
| **चतुर्थ इकाई** | पाणिनीयशिक्षा - प्रारम्भ से 30 श्लोक तक (12 घण्टे) |
| **पंचम इकाई** | पाणिनीयशिक्षा - 31वें श्लोक से समाप्ति तक (12 घण्टे) |
| **पाठ्यपुस्तकें** | 1. व्याकरणमहाभाष्यम् (पश्पशाह्निकम्), व्याख्याकार रमाकान्त पाण्डेय, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर<br>2. व्याकरणमहाभाष्यम् (पश्पशाह्निकम्), व्याख्याकार हरस्वरूप वशिष्ठ, हंसा प्रकाशन, जयपुर<br>3. व्याकरणमहाभाष्यम्, व्याख्याकार मधुसूदन मिश्र, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी<br>4. पाणिनीयशिक्षा, व्याख्याकार अर्कनाथ चौधरी, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर<br>5. पाणिनीयशिक्षा, व्याख्याकार शिवराज आचार्य, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी |
| **ई संसाधन** | epustakalay.com |

| एम.ए. संस्कृत द्वितीय सेमेस्टर | |
|---|---|
| **पाठ्यक्रम कूट संख्या** | SAN8010T |
| **पाठ्यक्रम क्रमांक** | V |
| **पाठ्यक्रम का नाम** | महाकाव्य एवं संस्कृत साहित्य का इतिहास |
| **पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर** | एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0 |
| **पाठ्यक्रम की क्रेडिट** | 4 |
| **पाठ्यक्रम का प्रकार** | डी.सी.सी. (Discipline Centric Compulsory Course) |
| **पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार** | 40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्यूटोरियल |
| **पाठ्यक्रम पठन की पूर्व-योग्यता** | स्तर 7 की उत्तीर्णता |
| **उद्देश्य** | संस्कृत साहित्य के प्रमुख कवियों का परिचय एवं शिशुपालवध महाकाव्य के प्रथम सर्ग का अधिगम। |
| **पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम** | 1. विद्यार्थी संस्कृत साहित्य के प्रमुख कवियों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।<br>2. विद्यार्थी शिशुपालवध महाकाव्य के प्रथम सर्ग का अधिगम कर सकेंगे।<br>3. विद्यार्थी 'माघे सन्ति त्रयो गुणाः' की विशेषता वाले महाकवि माघ के काव्यकौशल से परिचित हो सकेंगे।<br>4. विद्यार्थियों की संस्कृत काव्यपठन की ओर अभिवृद्धि हो सकेगी।<br>5. विद्यार्थी काव्यपठन से लोकव्यवहार की प्राप्ति एवं रसास्वादन कर सकेंगे। |
| **पाठ्यक्रम** | 1. महाकवि माघ विरचित शिशुपालवध महाकाव्य का प्रथम सर्ग |

| | |
|---|---|
| | 2. संस्कृत साहित्य का इतिहास |
| **पाठ्यक्रम की इकाइयाँ** | |
| **प्रथम इकाई** | शिशुपालवध प्रथम सर्ग - 1 से 24 पद्य (12 घण्टे) |
| **द्वितीय इकाई** | शिशुपालवध प्रथम सर्ग - 25 से 47 पद्य (12 घण्टे) |
| **तृतीय इकाई** | शिशुपालवध प्रथम सर्ग - 48 पद्य से अन्त तक (12 घण्टे) |
| **चतुर्थ इकाई** | संस्कृत साहित्य के इतिहास के अन्तर्गत निम्नलिखित कवियों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व अध्ययनीय है- भास, अश्वघोष, कालिदास, शूद्रक, विशाखदत्त, भारवि, माघ (12 घण्टे) |
| **पंचम इकाई** | संस्कृत साहित्य के इतिहास के अन्तर्गत निम्नलिखित कवियों का व्यक्तित्व एवं कृतित्व अध्ययनीय है - हर्ष, बाणभट्ट, दण्डी, भवभूति, भट्टनारायण, बिल्हण, श्रीहर्ष एवं अम्बिकादत्त व्यास (12 घण्टे) |
| **पाठ्यपुस्तकें** | 1. शिशुपालवध प्रथम सर्ग, कैलाश चंद्र त्रिवेदी, हंसा प्रकाशन, जयपुर<br>2. शिशुपालवध प्रथम सर्ग, श्रद्धा सिंह, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर<br>3. शिशुपालवध प्रथम सर्ग, धुरन्धर पाण्डेय, भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी<br>4. शिशुपालवध, आद्या प्रसाद मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद |
| **सन्दर्भ पुस्तकें** | 1. संस्कृत साहित्य का इतिहास, बलदेव उपाध्याय, शारदा निकेतन, वाराणसी<br>2. संस्कृतसुकविसमीक्षा, बलदेव उपाध्याय, चौखम्भाविद्याभवनप्रकाशन, वाराणसी |

| | |
|---|---|
| | 3. संस्कृत साहित्य का समग्र इतिहास, राधावल्लभ त्रिपाठी, न्यू भारतीय बुक कॉरपोरेशन, दिल्ली<br>4. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, बलदेव उपाध्याय; राधावल्लभ त्रिपाठी, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ<br>5. संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी<br>6. महाकवि माघ महिमा, भास्कर शर्मा श्रोत्रिय, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर |
| **ई संसाधन** | epustakalay.com |

| एम.ए. संस्कृत द्वितीय सेमेस्टर | |
|---|---|
| **पाठ्यक्रम कूट संख्या** | SAN8100T |
| **पाठ्यक्रम क्रमांक** | VI |
| **पाठ्यक्रम का नाम** | प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं पुराणेतिहास |
| **पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर** | एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0 |
| **पाठ्यक्रम की क्रेडिट** | 4 |
| **पाठ्यक्रम का प्रकार** | जी.ई.सी. (Generic Elective Course) |
| **पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार** | 40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्यूटोरियल |
| **पाठ्यक्रम पठन की पूर्व-योग्यता** | स्तर 7 की उत्तीर्णता |
| **उद्देश्य** | प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं पुराणेतिहास का अधिगम। |
| **पाठ्यक्रम अधिगम के परिणाम** | 1. विद्यार्थी प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों से प्रेरित हो सकेंगे।<br>2. विद्यार्थी भारतवर्ष की प्रतिष्ठाद्वय कही जाने वाली संस्कृत और संस्कृति के प्रति उन्मुख हो सकेंगे।<br>3. विद्यार्थी रामायण, महाभारत एवं पुराणों के आख्यानों से लोकव्यवहार एवं नैतिक शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे। |
| **पाठ्यक्रम** | 1. प्राचीन भारतीय संस्कृति<br>2. रामायण<br>3. महाभारत<br>4. पुराण |
| **पाठ्यक्रम की इकाइयाँ** | |

| | |
|---|---|
| **प्रथम इकाई** | प्राचीन भारतीय संस्कृति - वर्णव्यवस्था, आश्रमव्यवस्था, पुरुषार्थ, ऋण, पञ्चमहायज्ञ (12 घण्टे) |
| **द्वितीय इकाई** | प्राचीन भारतीय संस्कृति - संस्कार, विवाह, प्राचीन विद्या केन्द्र एवं शिक्षा, भारतीय संस्कृति का विस्तार, विशेषताएँ एवं महत्त्व (12 घण्टे) |
| **तृतीय इकाई** | रामायण - रचनाकार, रचनाकाल, विषयवस्तु, रामायणकालीन संस्कृति व समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणा स्रोत, साहित्यिक महत्त्व, रामायण में आख्यान (12 घण्टे) |
| **चतुर्थ इकाई** | महाभारत - रचनाकार, रचनाकाल, विषयवस्तु, महाभारतकालीन संस्कृति व समाज, परवर्ती ग्रन्थों के लिए प्रेरणा स्रोत, साहित्यिक महत्त्व, महाभारत में आख्यान (12 घण्टे) |
| **पंचम इकाई** | पुराण - अर्थ, लक्षण, विषयवस्तु, पुराणों की संख्या तथा विभाजन, रचनाकाल एवं अष्टादश महापुराणों का परिचय (12 घण्टे) |
| **सन्दर्भ पुस्तकें** | 1. भारतीय संस्कृति, वाई.एस. रमेश, हंसा प्रकाशन, जयपुर<br>2. भारतीय संस्कृति, प्रीतिप्रभा गोयल, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर<br>3. मनुस्मृति, कमलनयन शर्मा, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय, जयपुर<br>4. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी<br>5. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, बलदेव उपाध्याय; राधावल्लभ त्रिपाठी, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ<br>6. संस्कृत साहित्य का इतिहास, उमाशंकर शर्मा ऋषि, चौखंबा भारती अकादमी, वाराणसी<br>7. रामायण, गीताप्रेस, गोरखपुर |

| | |
|---|---|
| | 8. महाभारत, गीताप्रेस, गोरखपुर<br>9. पुराण-परिशीलन, गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना<br>10. पुराण विमर्श, बलदेव उपाध्याय, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी |
| **ई संसाधन** | epustakalay.com |

| एम.ए. संस्कृत द्वितीय सेमेस्टर | |
|---|---|
| **पत्र कूट संख्या** | SAN8101T |
| **पत्र क्रमांक** | VI |
| **पाठ्यक्रम का नाम** | श्रीमद्भगवद्गीता, नीतिकाव्य एवं अनुवाद |
| **पाठ्यक्रम का योग्यता स्तर** | एन.एच.ई.क्यू.एफ. स्तर 6.0 |
| **पाठ्यक्रम की क्रेडिट** | 4 |
| **पाठ्यक्रम का प्रकार** | जी.ई.सी. (Generic Elective Course) |
| **पाठ्यक्रम का पाठन प्रकार** | 40 व्याख्यान, 10 रचनात्मक एवं नैदानिक मूल्यांकन और 10 ट्यूटोरियल |
| **पाठ्यक्रम पठन की पूर्व-योग्यता** | स्तर 7 की उत्तीर्णता |
| **पाठ्यक्रम उद्देश्य** | 1. विद्यार्थी को सरल एवं रुचिपूर्ण तरीके से संस्कृत सम्भाषण, शुद्ध उच्चारण तथा हिंदी से संस्कृत एवं संस्कृत से हिन्दी अनुवाद में दक्षता प्रदान करना।<br>2. भारतीय संस्कृति एवं ज्ञानपरम्परा के आधारभूत ग्रन्थ श्रीमद्भवगद्गीता के दूसरे अध्याय के माध्यम से विद्यार्थी को संस्कृत भाषाज्ञान एवं नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करना।<br>3. संस्कृत साहित्य के प्रसिद्ध सुभाषित ग्रन्थ 'नीतिशतकम्' के माध्यम से विद्यार्थी को संस्कृत भाषाज्ञान एवं जीवनोपयोगी नीतिशिक्षा प्रदान करना। |
| **पाठ्यक्रम के अधिगम के परिणाम** | 1. विद्यार्थी संस्कृत भाषा के शुद्ध उच्चारण, सम्भाषण एवं लेखन में कुशल होंगे।<br>2. विद्यार्थी पाठ्यक्रम से इतर संस्कृत ग्रन्थों को भी पढ़ने एवं समझने में समर्थ हो सकेंगे। |

| | |
|---|---|
| | 3. संस्कृत भाषा के अवबोध से विद्यार्थी भारतीय संस्कृति को सूक्ष्मता से समझने में सक्षम होंगे।<br>4. भगवद्गीता के अधिगम से विद्यार्थी सदाचरण एवं दुराचरण का विवेकज्ञान प्राप्त कर सदाचारी बनेंगे।<br>5. नीतिशिक्षा के अधिगम से विद्यार्थी जीवनोपयोगी व्यवहारिक ज्ञान से युक्त तथा जीवन में आने वाली चुनौतियों से निपटने हेतु दक्ष होंगे। |
| **पाठ्यक्रम** | 1. श्रीमद्भगवद्गीता - द्वितीय अध्याय<br>2. कपिलदेव द्विवेदी विरचित प्रारम्भिक रचनानुवादकौमुदी -1 से 17 अभ्यास<br>3. महाकवि भर्तृहरि विरचित नीतिशतक के कतिपय प्रमुख पद्य |
| **पाठ्यक्रम की इकाइयाँ (प्रत्येक इकाई हेतु 12 घण्टे)** | |
| **प्रथम इकाई** | श्रीमद्भगवद्गीता - द्वितीय अध्याय के प्रारम्भ से 38 श्लोक तक (12 घण्टे) |
| **द्वितीय इकाई** | श्रीमद्भगवद्गीता - द्वितीय अध्याय में 39वें श्लोक से द्वितीय अध्याय की समाप्ति तक (12 घण्टे) |
| **तृतीय इकाई** | प्रारम्भिक रचनानुवादकौमुदी - 1 से 9 अभ्यास के आधार पर हिन्दी से संस्कृत अनुवाद (12 घण्टे) |
| **चतुर्थ इकाई** | प्रारम्भिक रचनानुवादकौमुदी - 10 से 17 अभ्यास के आधार पर हिन्दी से संस्कृत अनुवाद (12 घण्टे) |
| **पंचम इकाई** | महाकवि भर्तृहरि विरचित नीतिशतक के निम्नलिखित पद्यों का अध्ययन अपेक्षित है-<br>1. दिक्कालाद्यनवच्छिन्नानन्तचिन्मात्रमूर्त्तये।<br>स्वानुभूत्येकमानाय नमः शान्ताय तेजसे॥<br>2. बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः।<br>अबोधोपहतश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम्॥<br>3. अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।<br>ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि तं नरं न रञ्जयति॥ |

4. साहित्यसङ्गीतकलाविहीन: साक्षात्पशु:
पुच्छविषाणहीन:।
तृणं न खादन्नपि जीवमानस्तद्भागधेयं परमं पशूनाम्॥
5. येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो
न धर्म:।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥
6. वरं पर्वतदुर्गेषु भ्रान्तं वनचरै: सह।
न मूर्खजनसम्पर्क: सुरेन्द्रभवनेष्वपि॥
7. केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्धजा:।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्॥
8. विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकरी यश:सुखकरी विद्या गुरूणां गुरु:।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं
विद्या राजसु पूजिता न तु धनं विद्याविहीन: पशु:॥
9. जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं मानोन्नतिं
दिशति पापमपाकरोति।
चेत: प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं सत्संगति: कथय
किं न करोति पुंसाम्॥
10. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचै: प्रारभ्य विघ्नविहता
विरमन्ति मध्या:।
विघ्नै: पुन: पुनरपि प्रतिहन्यमाना: प्रारभ्य तूत्तमजना:
न परित्यजन्ति॥
11. परिवर्तिनि संसारे मृत: को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंश: समुन्नतिम्॥
12. यस्यास्ति वित्तं स नरः कुलीनः स पण्डितः स श्रुतवान्
गुणज्ञः।
स एव वक्ता स च दर्शनीयः सर्वे गुणाः
काञ्चनमाश्रयन्ति॥
13. दानं भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति॥
14. दुर्जन: परिहर्त्तव्यो विद्ययाऽलङ्कृतोऽपि सन्।

| | |
|---|---|
| | मणिना भूषित: सर्प: किमसौ न भयङ्कर:॥<br>15.आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण लघ्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।<br>दिनस्य पूर्वार्धपरार्धभिन्ना छायेव मैत्री खलसज्जनानाम्॥<br>16.मृगमीनसज्जनानां तृणजलसंतोषविहितवृत्तीनाम्।<br>लुब्धकधीवरपिशुना निष्कारणवैरिणो जगति॥<br>17.विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधि विक्रम:।<br>यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥<br>18.श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन।<br>विभाति काय: करुणापराणां परोपकारैर्न तु चन्दनेन॥<br>19.पापान्निवारयति योजयते हिताय गुह्यञ्च गूहति गुणान्प्रकटीकरोति।<br>आपद्गतञ्च न जहाति ददाति काले सन्मित्रलक्षणमिदं प्रवदन्ति सन्त:।।<br>20.निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु लक्ष्मी: समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।<br>अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा न्यायात्पथ: प्रविचलन्ति पदं न धीरा:॥<br>21.आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपु:।<br>नास्त्युद्यमसमो बन्धु: कुर्वाणो नावसीदति॥<br>22.छिन्नोऽपि रोहति तरु: क्षीणोऽप्युपचीयते पुनश्चन्द्र:।<br>इति विमृशन्त: सन्त: संतप्यन्ते न ते विपदा॥<br>23.वने रणे शत्रुजलाग्निमध्ये महार्णवे पर्वतमस्तके वा।<br>सुप्तं प्रमत्तं विषमस्थितं वा रक्षन्ति पुण्यानि पुरा कृतानि॥<br>24.को लाभो गुणिसङ्गम: किमसुखं प्राज्ञेतरै: सङ्गति:<br>का हानि: समयच्युतिर्निपुणता का धर्मतत्त्वे रति:।<br>क: शूरो विजितेन्द्रिय: प्रियतमा काऽनुव्रता किं धनं विद्या किं सुखमप्रवासगमनं राज्यं किमाज्ञाफलम्॥<br>(12 घण्टे) |

| | |
|---|---|
| **पाठ्यपुस्तकें** | 1. प्रारम्भिक रचनानुवादकौमुदी - डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी<br>2. श्रीमद्भगवद्गीता (पदच्छेद, अन्वय एवं साधारण भाषाटीका सहित), जयदयाल गोयन्दका, गीताप्रेस, गोरखपुर<br>3. नीतिशतकम् (भर्तृहरि), नरेश झा, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी<br>4. नीतिशतकम् (भर्तृहरि ), राकेश शास्त्री, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली |
| **ई संसाधन** | epustakalay.com |